सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय,वाराणसी

शोक प्रस्ताव

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय,वाराणसी के पूर्व कुलपति एवं कविकुलगुरू कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय,रामटेक,नागपुर के कुलपति प्रो0 हरेराम त्रिपाठी जी एवं धर्मपत्नी श्रीमती बादामी देवी के साथ नागपुर से अपने गांव कुशीनगर जा रहे थे। यात्रा के दौरान मऊ जनपद के दोहरीघाट के पास दिनांक 23 अगस्त 2025 को पूर्वाह्ण 06.00 बजे सड़क दुर्घटना में आकस्मिक निधन हो गया। आपके निधन का समाचार सुनकर विश्वविद्यालय परिवार स्तब्ध एवं मर्माहत है।

आपका जन्म उत्तर प्रदेश के कुशीनगर के शंकरपुर,पटखौली गांव में श्री भीमशंकर त्रिपाठी के यहा 01 अगस्त 1966 में हुआ था। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा बघौचघाट, देवरिया से हुई है। उच्च शिक्षा के लिये वर्ष 1986 में काशी आकर सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से शास्त्री,आचार्य एवं न्यायशास्त्र के उद्भट्ट विद्वान प्रो0 वशिष्ठ त्रिपाठी के निर्देशन में विद्यावारिधि की उपाधि प्राप्त किये।

प्रो0 त्रिपाठी जी सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति बनने से पूर्व अपने कैरियर की शुरूआत वर्ष 1993 में राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान (रणवीर कैम्प–जम्मू) में बतौर अनुसंधान सहायक पद से प्रारम्भ किये। जिसके उपरान्त वर्ष 2001 में आपकी नियुक्ति श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,नई दिल्ली में सर्वदर्शन विभाग में सह–आचार्य के रूप में अध्यापन करते हुये वर्ष 2009 में आचार्य के पद को सुशोभित किये।

संस्कृत शिक्षा के क्षेत्र में प्रो0 त्रिपाठी के उत्कृष्ट योगदान को देखते हुये उत्तर प्रदेश की महामहिम राज्यपाल एवं कुलाधिपति ने सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय,वाराणसी के 35वें कुलपति के रूप में नियुक्त किया। प्रो0 त्रिपाठी ने 12 जून 2021 को कुलपति के रूप में कार्यभार ग्रहण किये इसके उपरान्त 04 जून 2023 को इस विश्वविद्यालय से इस्तीफा देकर कविकुलगुरू कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय,रामटेक,नागपुर में कुलपति पद का दायित्व निर्वहन कर रहे थे।

प्रो0 त्रिपाठी को अपने कार्यकाल के दौरान अनेकों **पुरस्कारों एवं सम्मान** से सम्मानित किया गया है। जिसमें मुख्यतः शंकर पुरस्कार, संस्कृत संस्थान, लखनऊ, महर्षि बादरायण व्यास सम्मान,राष्ट्रपति पुरस्कार वर्ष 2003, पाणिनी पुरस्कार 2013, विशिष्ट पुरस्कार 2018, डॉ0सर्वपल्ली राधाकृष्णन अलंकरण 2021–22, पूर्वाचंल गौरव पुरस्कार तथा गंगेशोपाध्याय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित किया गया है साथ ही प्रो. त्रिपाठी की 13 पुस्तकें प्रकाशित, 21 सम्पादित, 71 शोध–पत्र प्रकाशित तथा 19 पीएचडी एवं 10 एमफिल का भी प्रकाशन हुआ है।

आप अपनी विशिष्ट कार्य शैली एवं मृदुभाषी स्वभाव के कारण जन–जन में लोकप्रिय रहे है। आप अपने शिष्यों की एक लम्बी श्रृखंला एवं आप अपने पीछे तीन पुत्र एवं तीन पुत्रियों सहित भरा–पूरा परिवार छोड़ गये है।

आपके आकस्मिक निधन से विश्वविद्यालय परिवार के साथ–साथ काशी की पाण्डित्य परम्परा की अपूरणीय क्षति हुई है। जिसकी भरपायी निकट भविष्य में सम्भव नही है।

विश्वविद्यालय परिवार की यह शोक सभा भूतभावन–भगवान विश्वेश्वर से प्रार्थना करती है कि आपके मुक्त आत्मा को शिवत्व प्रदान करते हुये आपके शोक सन्तप्त परिजनों एवं संस्कृत समाज को इस असह्य वेदना को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

विश्वविद्यालय परिवार
सं0सं0वि0वि0,वाराणसी

समय–अपराह्ण 03.00 बजे
दिनांक–25.08.2025
स्थान–पाणिनी भवन सभागार